शांति नोबेल पुरस्कार ने अंतत : अपनी इज्जत बचा ली ?

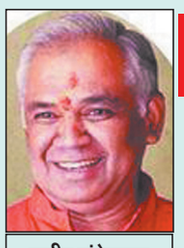

राजीव खंडेलवाल
(लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने 10 अक्टूबर 2025 को ओस्लो में वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को वर्ष 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार देने की घोषणा की. यह सम्मान उन्हें वेनेजुएला के नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा और तानाशाही से लोकतंत्र की ओर शांतिपूर्ण संक्रमण के लिए किए गए उनके अथक प्रयासों के कारण दिया गया. वस्तुत: मारिया को यह पुरस्कार दिया जाना विश्व के सभी लोकतांत्रिक (तथाकथित) तानाशाहों के लिए स्पष्ट संदेश है. जो भी व्यक्ति लोकतंत्र को बचाने और उसे सशक्त बनाने के लिए कदम उठाएगा, विश्व उसके शांतिपूर्ण प्रयासों को नमन करेगा, चाहे वह सत्ता के विरुद्ध ही क्यों न खड़ा हो. वास्तव में नोबेल शांति पुरस्कार का उद्देश्य भी यही है- शांति को बढ़ावा देना, मानवाधिकारों की रक्षा करना और संघर्षों के समाधान में योगदान देना. नोबेल पुरस्कार में एक मिलियन अमेरिकन डॉलर अर्थात 8.30 करोड़ रूपये की राशि भी मिलेगी.

अंतत: नोबेल पुरस्कार की जीत हुई- जब से डोनाल्ड ट्रंप ने वर्ष 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार पाने की हुंकार लगाते हुए स्वयंभू दावेदारी भरी थी, तभी से ट्रम्प की दादागिरी, सनक व टैरिफ वार के हथियार का उपयोग कर विश्व में ट्रम्प के बढ़ते दबाव के कारण नोबेल पुरस्कार बहुत डरा हुआ. असहज हो गया था एक वजह यह भी थी कि नोबेल किसी कसाई के खूंटे से बंधने के लिए तैयार नहीं था और न ही घुटने टेकने के लिए तैयार था. क्योंकि नोबेल तो शांति का प्रतीक है, जिसे कोई शांति दूत ही प्राप्त करने का अधिकारी हो सकता है. जबकि विश्व के विभिन्न हिस्सों में चल रहे अधिकांश युद्धों में विश्व का दादा बनने की चाह में ट्रंप की भूमिका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रही है. ट्रम्प पहले उन्होंने युद्ध को भड़काने और बढ़ाने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते है, और फिर चौधरी बनकर चौधराहट कर सैन्य शक्ति और बमबारी के दम पर शांति स्थापित करने की नौटकीं कर नरेटिव बनाने की कोशिश करते हैं. ट्रंप की यह तथाकथित शांति स्थापना असल में 24 कैरेट की नहीं, बल्कि 5 माइक्रॉन गोल्ड-पॉलिश वाली थी. दिखने में चमकदार, पर असली नहीं. सच तो यह है कि अगर अमेरिका अपने सैन्य उद्योगों व सामानों के लिए बाजार के लिए युद्ध न भड़काए, तो विश्व में स्वयमेव शांति बनी रह सकती है. आखिर जिसका धंधा ही कफन और ताबूत का हो, वह शांति कैसे चाहेगा !. यही कारण है कि इस बार वास्तव में शांति और लोकतंत्र दोनों की जीत हुई है.

डोनाल्ड ट्रंप प्रयासों में असफल- पिछले छह महीनों से डोनाल्ड ट्रंप हर मंच पर जबरदस्त लॉबिंग कर प्रयासरत थे कि उन्हें 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार मिल जाए. ट्रम्प ने दूसरे देशों पर भी जबरदस्ती दबाव बनाया. इतने अति आत्मविश्वास में थे कि उन्होंने वाईट हाउस में नोबेल पुरस्कार मिलने की आशा में स्वागत कार्यक्रम की तैयारी भी चालू कर दी थी. उनका तर्क था कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच युद्धविराम से लेकर विश्व के कई हिस्सों में शांति स्थापित करने के सफल प्रयास किए हैं. अमेरिका के प्रतिष्ठित समाचार पत्र द गार्जियन के अनुसार, ट्रंप नोबेल पुरस्कार पाने की दृष्टि से इतने मोहग्रस्त हो गए थे कि उन्होंने अपनी विदेश नीति ही इस उद्देश्य से गढ़ ली थी. परंतु ट्रंप यह भूल गए कि नोबेल पाने के लिए सिर्फ युद्धविराम नहीं, बल्कि मन और मंशा दोनों की शांति जरूरी है. अत: ट्रंप कार्ड (तुरूप का एक्का) नहीं चला.

परंतु क्या मोगैम्बो भी खुश हुआ ?

ट्रम्प का नोबेल सपना टूटना ही था- ट्रंप ने नई टैरिफ नीति लाकर टैरिफ वॉर छेड़ दी. यानी तथाकथित शांति की बात करते-करते नई अशांति पैदा कर दी. नोबेल के लिए जिस शांति की आवश्यकता है, वह सिर्फ युद्ध क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक राजनैतिक, संवैधानिक, व्यापारिक, सामाजिक, धार्मिक समस्त क्षेत्रों में. सच तो यह है कि कच्चे घड़े में पानी भरने के प्रयास में घड़ा बिखर जाता है. हुआ यही. आज चर्चा इस बात की नहीं कि नोबेल पुरस्कार किसे मिला, बल्कि इस बात की ज्यादा है कि ट्रंप को नहीं मिला! यही असल में नोबेल पुरस्कार की जीत है, जिसने ट्रंप के बनाये नरेटिव को पूरी तरह ध्वस्त कर अपनी सर्वकालीन प्रतिष्ठा बनाये रखी. वैसे विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्राध्यक्ष प्रेसिडेंट ट्रंप द्वारा नोबेल पुरस्कार की गंभीर दावेदारी करने नोबेल पुरस्कार की महत्ता व प्रतिष्ठा पर मोहर लगी.

नोबेल पुरस्कार ने अपनी इज्जत बचाई- नोबेल पुरस्कार डोनाल्ड ट्रंप जैसे व्यक्ति के पास न जाकर सचमुच में उसने अपनी इज्जत बचा ली. हमारे मेनस्ट्रीम मीडिया ने भी पहले यही बताया कि ट्रंप का नाम नोबेल सूची में नहीं है पर यह नहीं बताया कि किसे मिला है ? इस तथ्य को बाद में बतलाया. इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि चक्की में से साबुत निकल आने वाले ट्रंप ने भारत में अपने संपर्कों के माध्यम से किस तरह का दबाव बनाने की कोशिश की थी. परंतु अंतत: वे औंधे मुंह ही गिर पड़े. ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत-पाक युद्ध विराम का श्रेय लेने के लिए उन्होंने लगभग 50 बार दावा किया. यद्यपि भारत ने अधिकतम रूप से इससे इंकार किया. परन्तु प्रधानमंत्री मोदी ने उनका नाम लेकर कभी सीधा खंडन नहीं किया. ट्रंप के पालित जमूरे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के साथ परस्पर घोर विरोधी इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ट्रंप को नोबेल पुरस्कार दिए जाने के लिए नामजद किया. इसी प्रकार अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव सहित पांच देशों ने भी उसी तर्ज पर उनका समर्थन किया. अहा ! सूप बोले तो चलनी भी बोले, जिसमें बहत्तर छेद !

ट्रंप का शांति पुरस्कार का क्या दावा ! मजाक नहीं?- विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र वाला देश अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र देश ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के विरुद्ध की गई सैन्य करवाई से टैरिफ वार की धमकी द्वारा बातचीत की टेबल पर लाने का दावा कर अपने लिए नोबेल का रास्ता खोला. परंतु सच यह है कि कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय के मद में चूर ट्रंप ने खुद को पीस प्रेसिडेंट बताते हुए नौ महीने के कार्यकाल में आठ युद्धों को समाप्त करने का झूठा दावा किया.

निष्कर्ष- इस बार नोबेल समिति ने न केवल एक सच्चे लोकतंत्र सेवी को सम्मानित किया, बल्कि स्वयं नोबेल की गरिमा और प्रतिष्ठा भी अक्षत रखी. इसलिए कहा जा सकता है. नोबेल जीता नहीं, बल्कि इस बार सचमुच 'शांति' ने जीता है.

लोकतंत्र का मतलब ही शांति

लोकतंत्र का सीधा संबंध शांति से होता है. यही कारण है कि तानाशाही शासक वाला देश वेनेजुएला में लोकतंत्र की रक्षा हेतु 30 वर्षों से संघर्षरत मारिया को यह पुरस्कार मिला. आज जब हम चारों ओर नजर दौड़ाते हैं, तो पाते हैं कि लोकतांत्रिक देशों में भी प्राकृतिक शांति नहीं, बल्कि दादागिरी की शांति हावी है. लोकतंत्र भी आजकल निर्वाचित निरंकुश (आटोजेशी) में बदल गया. ट्रंप अपनी दादागिरी स्थापित करने के लिए कभी युद्ध करवाते हैं, कभी रुक जाते हैं. कहि रहीम कैसे निभे केर बेर कौ संग. यही उनकी स्थिति है. नोबेल शांति पुरस्कार पाने के लिए आपको शांति दूत बनना पड़ता है, न कि शांति का व्यापारी. लेकिन आज की विश्व व्यापी राजनीति में भी परसेप्शन और ब्रांडिंग का बोलबाला है. इसलिए ट्रंप पहले युद्ध के मैदान सजाते हैं, दो देशों के बीच तनाव को बढ़ाते हुए युद्ध के दुष्चक्र में झोंक देते हैं, फिर कैमरे के सामने शांति के मसीहा बनने का असफल प्रयास करते हैं.

व्यंग्य

पति का वह यादगार एक दिन ...

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

भाई साहब यह कहावत एक दम सोलह आने सही है कि एक दिन घूरे के भाग्य भी पलटते हैं. उसी तरह करवाचौथ वह दिन है जब 364 दिनों के बाद पति नामक निरीह प्राणी के भी दिन पलटते हैं. एक तरह से देखा जाए तो प्राणियों में पति ही वह घूरा है जिसे पत्नि द्वारा साल भर तक बेचारे को घूरा जाता है. पूरे साल में भैया यही एक दिन है जब पति नाम का निरीह प्राणी नंदी की तरह महत्वपूर्ण हो जाता है. इस दिन वह अपनी पत्नि को बड़ी शान से पानी पिला कर श्रीमती जी का उपवास तुड़वाता है. बाकी 364 दिन तो वह खुद ही टूटता रहता है. इस दिन अपनी जीवन संगिनी को पानी पिलाना उसकी ड्यूटी होती है. ड्यूटी मतलब ड्यूटी. नो भूल, नो चूक.

यदि पति भूल गया तो, पूरे साल भर पत्नि भी भूल जाती है कि आपका ओहदा क्या है और वो सात वचन क्या हैं ? जो उसने अग्नि और पंडत जी को हाजिर नाजिर मान कर लिए थे. वह यह भी भूल जाती है कि आप उसके पप्पू के पापा हो. वह साल भर तक आप पापा को पप्पू बना कर रखती है और आपने यदि यह टास्क तय समय पर तय कर लिया तो भी इसकी कोई गारंटी नहीं कि अगली सुबह आपके साथ पत्नि का व्यवहार कैसा होगा. ऐसी परिस्थित में तब आपके साथ पुन: मूषको: भव: जैसी घटना होना तो कम्प्लीटली तय है. इसलिए लिमिट में रहने का है, एटीट्यूड नहीं दिखाने का.

करवा चौथ वह दिन है जब पति को वास्तव में पहली बार अपने पतित्व का एहसास होता है. इस परिवर्तन का चुपोचाप से मन ही मन आनंद लेने का है. क्योंकि पत्नि के आगे किसी की भी नहीं चलती है. यह वह शक्ति है जिसका कोई तोड़ नहीं है और यदि कहीं आपने ग़लती से जरा भी सब्स्टीट्यूट अथवा अल्टरनेट ढूंढने की कोशिश की तो वहां भी आपके पूजे जाने की शतप्रतिशत संभावना बलवती है. यानि पूजा तो आपके नसीब में अटल है. आपने वह बॉलीवुड फिलम देखी होगी जिसका शीर्षकथा सौ दिन सास का एक दिन बहू का . एक और टीवी सीरियल आया था सास भी कभी बहू थी. तो भाइयों यह समझ लो कि उपरोक्त लाइनों में वर्णित सास हो या बहू दोनों महिलाएं है. दोनों ही दोनों पदों पर रहते हुए पॉवरफुल हैं. यह हंड्रेड परसेंट मान लीजिए कि कोई भी पुरुष न तो कभी पॉवरफुल था और न कभी होगा. चाहे वह बेचारा पति हो या ससुरा. कुल देवता से पहले कुलदेवी की ही पूजा की जाती है. महादेव को भी काली माता का गुस्सा शांत करने के लिए उनके कदमों में लेटना पड़ा था.

करवा चौथ वह त्योहार है जहां पति को पत्नि को प्रसन्न करने का एक गोल्डन चांस मिलता है. इस दिन उसे पत्नि को उपहार देना होता है . उपहार को देखने के बाद ही गृह स्वामिनी द्वारा यह तय किया जाता है कि उस दिन आपको कितना वेटेज मिलना है. आपको ये सब निस्पृह भाव से श्रीमद् भगवत गीता के उपदेश को ध्यान में रख कर करना है. इस उपदेश में कहा गया है कि तुम क्या लेकर आए थे और क्या लेकर जाओगे. व्यर्थ की चिंता क्यों करते हो. मान अपमान यह सब सांसारिक भ्रम है, तुम्हें इस सबसे ऊपर उठना है. बिना किसी से आशा या अपेक्षा के.

तुम केवल यह देखो कि जिसे तुम सात फेरे लेकर आए थे वह पत्नि कितनी भक्ति भाव से तुम्हारी लंबी उम्र के लिए कितना कठिन उपवास कर रही हैं. तुम्हें उसने ठोक बजा के छलनी में से निकलने लायक बनाया है. वह चौबीसों घंटे, सातों दिन और बारह महीने तुम्हारी उसी तरह निगहबानी कर रही है जिस तरह फौजी सरहद पर निगहबानी करते हैं. उसका उद्देश्य है कि कहीं तुम पथ से भटक नहीं जाओ. जो पत्नि करवा चौथ पर तुम्हारी पूजा और आरती उतारने के बाद अपना उपवास तोड़ती है उसमें इतना सामर्थ है कि पथ से भटकने पर वह तुम्हारी आरती भी उतार सकती है. ईश्वर ने यह दिन इसलिए बनाया है कि इस दिन को तुम एंजॉय करो. आगे तो सब, भली करेंगे राम.

भारतीय प्रतिभाओं की पसंद बन रहा जर्मनी

ब्रम्हदीप अलूने

अमेरिका की डिजिटल अर्थव्यवस्था केवल आर्थिक समृद्धि का आधार नहीं है, बल्कि यह वैश्विक तकनीकी नेतृत्व और रणनीतिक प्रभाव का प्रमुख स्तंभ भी है. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप वीजा प्रक्रिया को जटिल बनाकर भारतीय प्रतिभाओं को अमेरिका आने से रोकने की कोशिशें तो कर रहे हैं, लेकिन इसका दुष्प्रभाव अमेरिका पर भी पड़ सकता है. इन सबके बीच जर्मनी भारतीय आइटी विशेषज्ञों और विद्यार्थियों की स्वाभाविक पसंद हो सकता है.

अग्रणी वस्तुत: यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं में शामिल जर्मनी का अमेरिका पर भरोसा कम हुआ है तथा वह साफ्टवेयर विकास, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में अग्रणी बनकर अमेरिका पर से निर्भरता कम करना चाहता है. गूगल, माइक्रोसाफ्ट, अमेजन, एपल, मेटा जैसी कंपनियां अमेरिकी डिजिटल अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं. ये कंपनियां क्लाउड कंप्यूटिंग, ई-कामर्स, इंटरनेट मीडिया, साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में अग्रणी हैं और वैश्विक स्तर पर तकनीकी मानकों को निर्धारित करती हैं.

सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता पाने के लिए आज हर देश उच्च-स्तरीय तकनीकी प्रतिभा की तलाश कर रहा है. इस वैश्विक दौड़ में भारतीय आइटी विशेषज्ञों की मांग सबसे ज्यादा है. भारत में हर वर्ष लाखों इंजीनियर और तकनीकी स्नातक तैयार होते हैं, जिनमें से बड़ी संख्या में अमेरिका भी जाते रहे हैं. परंतु अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नई वीजा नीति के बाद अमेरिका जाने से जुड़ी मुश्किलों के कारण युवाओं का रुझान अन्य देशों की ओर हो रहा है. वैसे बीते कुछ वर्षों से बड़ी संख्या में भारतीय युवा जर्मनी भी जा रहे हैं, जिनकी संख्या अब और बढ़ सकती है

लागत और गुणवत्ता का अनूठा संतुलन भारतीय पेशेवरों को और भी प्रासंगिक बनाता है. विकसित देशों की तुलना में अपेक्षाकृत कम लागत पर उच्च-स्तरीय सेवाएं उपलब्ध होना कंपनियों के लिए अत्यंत लाभकारी है. अंग्रेजी भाषा में दक्षता और बहुराष्ट्रीय अनुभव भारतीय आइटी पेशेवरों को वैश्विक टीमों के साथ सहजता से जोड़ देता है. भारतीयों की नवाचार और नेतृत्व क्षमता ने उनकी छवि को और मजबूत किया है. गूगल के सुंदर पिचाई, माइक्रोसाफ्ट के सत्य नडेला और एडोब के शांतनु नारायण जैसे पेशेवरों ने यह सिद्ध किया है कि भारतीय आइटी विशेषज्ञ वैश्विक स्तर पर दूरदर्शी नेतृत्व देने में भी सक्षम हैं.

यूरोप की बड़ी अर्थव्यवस्था- जर्मनी यूरोप की सबसे बड़ी और विकसित अर्थव्यवस्थाओं में से एक है. इसकी वैश्विक पहचान न केवल औद्योगिक और तकनीकी ताकत से है, बल्कि इसके विश्वस्तरीय कंपनियों से भी है. जर्मनी में कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं जो आटोमोबाइल, साफ्टवेयर, रसायन, बैंकिंग और खेल उद्योग में अग्रणी हैं. हाल ही में जर्मनी के विदेश मंत्री भारत आए तो उनकी यात्रा के केंद्र में भारत और जर्मनी के बीच प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग रहा. अपनी यात्रा की शुरुआत में ही वेडफुल ने फोकस स्पष्ट करते हुए भारत के साथ सुरक्षा, हथियारों में सहयोग और आर्थिक संबंधों का दायरा बढ़ाने की बात कही थी. उन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत बेंगलुरु से करते हुए प्रमुख नवाचार और प्रौद्योगिकी केंद्रों का दौरा किया था. इन कार्यक्रमों में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और भारतीय विज्ञान संस्थान जैसे प्रमुख भारतीय संस्थानों के साथ बैठकें शामिल थीं. वेडफुल ने हरित प्रौद्योगिकी, डिजिटल परिवर्तन, एआइ, अंतरिक्ष सहयोग और सतत शहरी विकास जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर भी प्रकाश डाला.

कई मामलों पर दोनों देशों के दृष्टिकोण में सामंजस्य

भारत और जर्मनी के द्विपक्षीय संबंध राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक क्षेत्रों में गहराई एवं विविधता लिए हुए हैं. दोनों देशों ने आपसी सहयोग को मजबूत बनाने के लिए समय-समय पर रणनीतिक समझौते और साझेदारियां स्थापित की हैं. जर्मन कंपनियां भारत में औद्योगिक उत्पादन, आटोमोबाइल, मशीनरी और ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश कर रही हैं. इसके साथ ही भारत उच्च-कौशल आइटी सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स और इंजीनियरिंग समाधानों के माध्यम से जर्मनी के बाजार में योगदान देता है. जर्मनी और भारत सामरिक सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी रणनीतियों में सहयोग करते हैं. तकनीकी साझेदारी, साइबर सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के मामलों में दोनों देशों के दृष्टिकोण में सामंजस्य है. इसके अलावा, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए दोनों देशों का सहयोग रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है. भारत और जर्मनी के बीच रणनीतिक सहयोग वैश्विक मंचों पर भी देखा जा सकता है. दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, जी-20 और विश्व व्यापार संगठन जैसे बहुपक्षीय मंचों पर समान विचारधारा और लोकतांत्रिक मूल्यों को साझा करते हैं. औद्योगिक नवाचार, स्मार्ट सिटी, हरित ऊर्जा और तकनीकी नवाचार के क्षेत्रों में दीर्घकालिक साझेदारी दोनों देशों के लिए रणनीतिक महत्व रखती है. भारत जर्मनी सहयोग बहुआयामी और रणनीतिक है. आर्थिक, सामरिक और तकनीकी साझेदारी के माध्यम से यह दोनों देशों के लिए लाभकारी होने के साथ-साथ यूरोप और एशिया में स्थिरता, विकास और नवाचार का एक मजबूत आधार तैयार करती है.

संघ शताब्दी वर्ष

संघ और सरकार की निकटता के प्रमाण

कृष्णमोहन झा

इस वर्ष विजयादशमी की पुनीत तिथि का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए विशेष महत्व था. 100 वर्ष पूर्व डा केशव बलीराम हेडगेवार ने चंद साथियों के साथ मिलकर विजयादशमी के दिन ही संघ की स्थापना की थी इसलिए इस वर्ष संघ के स्थापना दिवस के अवसर पर संघ के नागपुर स्थित मुख्यालय में सरसंघचालक मोहन भागवत के उद्बोधन की सारा देश उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था. संघ प्रमुख ने अपने शताब्दी संबोधन में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के सभी मुद्दों पर संघ का जो दृष्टिकोण प्रस्तुत किया उसमें असहमति की कोई गुंजाइश नहीं थी.

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के मुख्य आतिथ्य में आयोजित संघ के इस यादगार स्थापना दिवस समारोह में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने अपने भाषण में महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर बेबाकी कै साथ अपने सारगर्भित विचार रखे जिनमें संघ प्रमुख के गहन चिंतन की अनुभूति करना कठिन नहीं था. संघ प्रमुख ने पहलगाम के आतंकी हमले पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया , श्रीलंका, बंगला देश और नेपाल में सरकार विरोधी हिंसात्मक प्रदर्शन,अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बदलते आयाम और राष्ट्र की प्रगति में स्वदेशी और स्वाबलंबन की आवश्यकता को लेकर संघ का जो दृष्टिकोण प्रस्तुत किया उस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रतिक्रिया गौरतलब है.

प्रधानमंत्री ने संघ प्रमुख के उद्बोधन को प्रेरणादायक बताते हुए कहा है कि डा मोहन भागवत जी ने राष्ट्र निर्माण में संघ के अतुलनीय योगदान पर प्रकाश डाला है. उन्होंने भारत की उस अंतर्निहित क्षमता को रेखांकित किया है जो देश को सशक्त बनाने के साथ साथ संपूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी है. उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी ने गत माह संघ प्रमुख मोहन भागवत के जन्म दिवस के अवसर पर भी विशेष लेख लिखा था. प्रधानमंत्री मोदी ने उस लेख में भी संघ प्रमुख की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए राष्ट्र निर्माण में संघ के योगदान को महत्वपूर्ण निरूपित किया था अपने उस लंबे लेख की शुरुआत में प्रधानमंत्री ने लिखा था कि आज एक ऐसे व्यक्तित्व का जन्म दिवस है

जिन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम् के मंत्र से प्रेरित होकर अपना पूरा जीवन सामाजिक परिवर्तन और बंधुत्व की भावना को सशक्त करने में समर्पित कर दिया है . यह हमारा सौभाग्य है कि स्वयं सेवकों के पास भागवत जी जैसे दूरदर्शी और परिश्रमी सरसंघचालक हैं . उनके नेतृत्व में संघ कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा है. प्रधानमंत्री मोदी ने विजयादशमी के एक दिन पूर्व नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक विशेष डाक टिकट और 100 रु मूल्य का एक आकर्षक सिक्का भी जारी किया.

इस सिक्के के एक ओर सिंह के साथ वरद हस्त की मुद्रा में भारत माता की भव्य आकृति बनी हुई है.उनके समक्ष नतमस्तक स्वयंसेवक दिखाई दे रहे हैं जिनके चेहरों पर भक्ति और समर्पण का भाव है. शुद्ध चांदी से निर्मित 100 रुपए मूल्य के इस अनूठे सिक्के में राष्ट्रीय स्वाहा , इदं राष्ट्राय ,इदं न मम अंकित है. प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार भारतीय मुद्रा में भारत माता का चित्र अंकित किया गया है.

यह ऐतिहासिक क्षण है. प्रधानमंत्री ने भावुक होते हुए कहा कि ये हमारी पीढ़ी के स्वयं सेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने को मिल रहा है. विजयादशमी भारतीय संस्कृति के इस विचार और विश्वास का कालजयी उद्घोष है. ऐसे महान पर्व पर 100 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना ये कोई संयोग नहीं था. ये हज़ारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनरुत्थान था जो समय समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए नये नये अवतारों में प्रकट होती है. इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है.

विजयादशमी की पावन तिथि पर संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र निर्माण में संघ के उल्लेखनीय योगदान और स्वयं सेवकों की समर्पित सेवा भावना को महत्वपूर्ण बताते हुए एक्स पर अपनी पोस्ट में लिखा - %100 साल पहले जब संघ की नींव रखी गई थी उस दिन विजयादशमी ही थी. समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के उद्देश्य से संघ की स्थापना हुई थी. लंबे कालखंड के दौरान असंख्य स्वयंसेवकों ने इस संकल्प को साकार करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री के जो उदगार व्यक्त किए हैं उसमें उनके अंतःकरण की आवाज की अनुभूति होती है. इसमें संघ के प्रति कृतज्ञता और समर्पण का जो भाव समाहित है वह उन असंख्य स्वयंसेवकों के लिए भी प्रेरित प्रेरणादायक है जिन्होंने संघ के स्वयं सेवक के रूप में राष्ट्र निर्माण के कार्य में समर्पित भाव से जुटे हुए हैं. प्रधानमंत्री मानते हैं कि संघ प्रमुख मोहन भागवत का आदर्श व्यक्तित्व एवं कृतित्व संघ के स्वयं सेवकों को राष्ट्र निर्माण के अपने कर्तव्य पथ पर समर्पित भाव से अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है.

उल्लेखनीय है कि अयोध्या में श्री रामलला मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने भी प्रधानमंत्री मोदी को तपस्वी कहकर संबोधित किया था. अनेक अवसरों पर वे प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व गुणों की प्रशंसा कर चुके हैं. प्रधानमंत्री ने संघ- स्थापना की शताब्दी पर संघ के लिए अपनी भावनाओं को जिस तरह बिना लाग-लपेट के अभिव्यक्त किया है उससे इन चर्चाओं पर भी विराम लग जाना चाहिए कि भाजपा और संघ के बीच सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है. संघ के सिद्धांतों में प्रधानमंत्री की आस्था और विश्वास अटूट और अडिग है. संघ के शताब्दी वर्ष के आयोजनों में कदम कदम पर इसके प्रमाण मिलते रहेंगे.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)